

शोध-ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध-पत्रिका
PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-27 VOLUME-1 ISSN-2454-6283 जनवरी-मार्च-2022
IMPACT FACTOR - (IIJIF-7.312) SJIF-6.586, IIFS-4.125,

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव, नांदेड
9405384672

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता-
महाराणा प्रताप हारिसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड-431605

प्रकाशन/प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार
पब्लिकेशन, नांदेड-महाराष्ट्र

मुद्रण/ मुद्रक
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

मेल पता shodhrityu78@yahoo.com

वेबसाइट www.shodhritu.com

"शोध-ऋतु" तिमाही पत्रिका में आलेख लेखक निम्न बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें ।

फॉण्ट-कृति देव 10 वर्ड फाइल में ही सामग्री स्वीकृत की जायेगी ।

आलेख पेज की मर्यादा चार पेज होगी ।

आलेख विशेषज्ञों द्वारा चयन किये जायेंगे ।

चयनित आलेख की सूचना मेल द्वारा आलेख लेखक को दी जायेगी ।

चयनित आलेख के लिए 1000रु प्रोसेसिंग शुल्क लिया जायेगा ।

लेखक मौलिक शोधपरक एवं वैचारिक आलेख ही भेजे ।

व्हाट्स एप-9405384672

बैंक विवरण

NAME	SUNIL GULABSING JADHAV
BANK	BANK OF MAHARASHTRA, WORKSHOP CORNER, NANDED, MAHARASHTRA
ACCOUNT NO.	2015 8925 290
IFSC CODE	MAHB0000720

वार्षिक परामर्श मंडल (2022)

- प्रो.डॉ.रामप्रसाद भट, हैम्बुर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
- प्रो.डॉ.रंजित उपुल, केलनिया विश्वविद्यालय, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.रिदिमा निशादिनी लंसकारा, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.अनुषा सल्वाथुरा, श्रीलंका
- प्रो.डॉ.नुर्मातोव सिराजोदीन, उज्बेकिस्तान
- सौ.सविता तिवारी, मॉरिशस
- प्रो.डॉ.मक्सोम देन्चेको, मास्को, रशिया
- प्रो.डॉ.हिदायतुल्लाह हकीमी, जलालाबाद, अफगानिस्तान
- प्रो.डॉ.हुरुई, उप-संकायाध्यक्ष, अफ्रीकी-एशियाई भाषा एवं संस्कृति संकाय क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, चीन
- प्रो.विवेक मणि त्रिपाठी, चीन

- प्राचार्य डॉ.आर.एन.जाधव, पीपल्स कॉलेज, नांदेड
- प्र.उपकुलपति डॉ.जोगेन्द्रसिंह बिसेन,
- स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय, नांदेड
- प्रो.डॉ.मुकेशकुमार मालवीय
- हिन्दू बनारस विश्वविद्यालय, बनारस
- प्रो.डॉ.राजेन्द्र सोबल, राजकोट, गुजरात
- प्रो.डॉ.अरविंद शुक्ल, उत्तर प्रदेश
- प्रो.डॉ.संगम वर्मा, पंजाब
- प्राचार्य डॉ.राजेन्द्र प्रसाद, प्रतापगढ़
- प्राचार्य डॉ.प्रवीण कुमार सक्सेना, गांगडतलाई, राजस्थान
- प्रो.डॉ.मंगला रानी, पटना
- प्रो.डॉ.पठाण रहीम, हैदराबाद
- प्रो.डॉ.श्यामराव राठोड, तेलंगाना
- प्रो.डॉ.भारत भूषण, पंजाब
- प्रो.डॉ.परिमल अम्बेकर, गुलबर्गा
- प्रो.डॉ.ओमप्रकाश सैनी, हरियाणा
- प्रो.डॉ.लक्ष्मी गुप्ता, यमुनानगर, हरियाणा

अनुक्रमणिका

1.संत नामदेव के मानवतावादी तथा जाति सम्बन्धी विचार.....	6
-डॉ. विरेन्द्र यादव.....	6
2.A Psychological Study Of Female Criminality	9
-Dr. Seema Prakash	9
3.पर्यावरण शिक्षा : आज की आवश्यकता	12
-डा० पूजा सिन्हा.....	12
4.चित्र: मुद्गल की कहानियों में आधुनिक समस्याएँ-देशमुख संजय मारोतराव.....	14
5.समानांतर फिल्म-आंदोलन की विचार-भूमि.....	16
-सुभाषचन्द्र गुप्त.....	16
6.प्रवासी हिंदी कहानियों में प्रवासी जीवन की समस्याएँ.....	21
-मनीषा.....	21
7.माँसाहार की हानियाँ व शाकाहार के लाभ	24
-डा०सुमन महता.....	24
8.Untold Story Of Savitri Pal Salve	25
- Jyoti Agnihotri,	25
9.पर्यावरण और कला-एक अध्ययन.....	28
-डॉ.प्रेमलता कश्यप.....	28
10.हिन्दी लघु नाटकों का शिल्पविधान.....	30
-डॉ.बंदना ठाकुर.....	30
11.तुलसीदास जी और उनके युग का चित्रण.....	31
-रेनु कुमारी.....	31
12.GOD PARTICLES : CREATOR OF MASS	33
-Kuldeep Singh.....	33
13.संत काव्य में सांस्कृतिक नवचेतना के उद्दीप्त स्वर.....	34
-डॉ० स्नेह लता गुप्ता.....	34
14.अमिनव आयामों का कृषि के सतत विकास में योगदान.....	38
-चन्द्रप्रभा.....	38
15.वाल्मीकीय रामायण में श्रीराम के आदर्शों का उल्लेख	41
-डा० वन्दना सक्सेना.....	41
16.आधुनिक समाज और धर्म	44
-डॉ०(श्रीमती) सुनीता अवस्थी.....	44
17.Judicial Response to Issues of Trafficking in Women and Children: An Overview	48
- Prof. Ashok Kumar Rai.....	48
18.Application Of Applied Buddhism And Its Impact On Persons Daily Life.....	51
-Dr. Nirja Sharma.....	51
19.बौद्ध धर्म-दर्शन	53
-डॉ.नीरजा शर्मा.....	53
20.States as a key stakeholder in India's Foreign policy	55
-Shaily vatsa.....	55
21.A Constitutional and Judicial Review of Human Rights of Muslim Women in India	58

-Dr. Yogendra Kumar Verma.....	58
22.हिन्दी उपन्यासों में दलितों चेतना : साम्प्रतिक दशा एवं दिशा.....	51
-डॉ० अक्वध बिहारी पुरान.....	61
23.The Impact and Influence of Cinema on Social Awareness.....	64
-Radhe Shyam Tiwary.....	64
24.शास्त्रीय संगीत में आधुनिकता का प्रभाव.....	68
-मोहिनी शुक्ला.....	68
25.महीप सिंह कहानियों में आर्थिक यथार्थ.....	70
-वीरेन्द्र कुमार यादव.....	70
26.नूर मुहम्मद की इद्रावती में भारतीय परिवेश.....	73
-पूर्णिया हरदिया.....	73
27.कबीर के काव्य की प्रासंगिकता.....	76
-डॉ० बालाजी गायकवाड.....	76
28.'श्रद्धा-भक्ति' निबंध का संवेदनात्मक पक्ष.....	79
- ¹ दिनीत कुमार वर्मा, ² डॉ० राजेश कुमार तिवारी.....	79
29.हिंदी-तेलुगु उपन्यास और आदिवासी आंदोलन.....	81
-राठौड़ सुरेश.....	81
30.Human Rights & Indian Constitution: A Critical Analysis.....	85
-Mr. Vivekanand ¹ , Mr. Upendra Grewal ²	85
31.मानवी हदक आणि अनुसूचित जातीतील विधवा महिला.....	91
- ¹ प्रा. हनुमंते अरविंद, ² प्रा. डॉ. मिसे रामचंद्र.....	91

ISSN-2454-6283 PEER REVIEWED JOURNAL

1. संत नामदेव के मानवतावादी तथा जाति सम्बन्धी विचार

—डॉ. विरेन्द्र यादव

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
केशव महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मानवतावाद की अवधारणा बहुत पुरानी है। प्राचीन काल से ही मानवतावाद की प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है! महात्मा बुद्ध और महावीर जैसे महापुरुषों ने बौद्ध तथा जैन धर्म की स्थापना की, जिसका उद्देश्य मानवतावाद को बढ़ावा देना था। अहिंसा उनका मुख्य लक्ष्य था। परन्तु यूरोप में मानवतावाद की अवधारणा 15वीं शताब्दी में हुई। प्रायः इतिहासकार यूरोप के मानवतावाद की अवधारणा को मान्यता देते हैं तथा भारत के मानवतावाद को खारिज करते हैं, जो कि सही नहीं है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही ऋषिमुनियों ने मानव-कल्याण के लिए अपने जीवन को त्याग दिया। यही नहीं, दधीचि जैसे ऋषि ने अपने जीवन को मानव-कल्याण के लिए त्याग दिया; क्या वह मानवतावाद नहीं था? उत्तर होगा 'था' अर्थात् ऐसा कार्य किया जाए जिसके द्वारा समाज तथा लोगों का भला हो सके। सच्चे अर्थों में वही मानवतावाद है।

पुरुषोत्तम अग्रवाल ने आधुनिकता पर विचार करते हुए कहा है कि "भारत में आधुनिकता तथा मानवतावाद यूरोप से भी पहले था। भारत में आधुनिकतावाद तथा मानवतावाद 13वीं शताब्दी में ही शुरू हो गया था। उस समय के संतों ने मानवतावाद को बढ़ावा दिया। संत नामदेव, पीपा, रैदास, तुलसी, मलूकदास, सूर, कबीर, जायसी इत्यादि संतों ने मानवतावाद के स्वरूप को विस्तृत किया। संतों का मुख्य उद्देश्य ईश्वर-भक्ति तथा मानव-कल्याण था। सवाल यह उठता है कि मानवतावादी लोगों ने अलग-अलग नजरिये से क्यों देखा? निर्गुण संतों ने अपने नजरिये से विचार किया और सगुण संतों ने अपनी दृष्टि से विचार किया। संत नामदेव का परिवेश 13वीं शताब्दी में सामाजिक जटिलताओं से घिरा हुआ था। उन्हें समाज की वेदनाओं को तथा समाज के शोषण को तरह-तरह से सहना पड़ा था। निम्न जाति का होने के कारण उन्हें मौलवी तथा पंडितों ने भक्ति करने तक को मना कर दिया था। सवाल यह उठता है कि ऐसा उन लोगों ने क्यों किया? क्या उस समय मानवतावाद नहीं था? यदि मानवतावाद था तो लोगों के शोषण की प्रवृत्ति अधिक क्यों थी? तो उत्तर होगा उस राग्य भी मानवतावाद था, शोषण की प्रवृत्ति भी अधिक थी। इसलिए, क्योंकि रागाज के उकेदारों ने लोगों को धार्मिक

जटिलताओं में उलझा रखा था। दूसरी बात वहाँ सामंतवादी सत्ता हावी थी, जिस कारण निम्नवर्ग का शोषण ज्यादा होता था।

संत नामदेव ने समाज को मानव-कल्याण की दृष्टि से देखा। उन्होंने यह महसूस किया कि ईश्वर मानव-कल्याण के लिए एक माध्यम है। परन्तु उसका प्रचार-प्रसार करने के लिए समाज में लोगों को जागरूक करना होगा और उन्होंने यही किया। लोगों की ऐसी मान्यता है कि संत नामदेव के विद्वल ने तो संत नामदेव के द्वारा दूध भी पीया था। उन्होंने लोगों को निर्गुण भक्ति का प्रचार-प्रसार करते हुए समाज के सामने जातिवाद, अंधविश्वास, छुआछूत, जैसे तरह-तरह के नए प्रश्न खड़े किए, यही नहीं वारकरी सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार के लिए महाराष्ट्र से लेकर उत्तर भारत तक का भ्रमण किया। संतों की संगति के द्वारा उस समय के लोगों को उन्होंने मानवतावाद का पाठ पढ़ाया। उसी कड़ी में कबीर, रैदास, मीराबाई इत्यादि संतों ने मानवतावाद के स्वरूप को विस्तृत किया। जहाँ कबीर कहते हैं—"कबीरा खड़ा बाजार में लिए लुकाटी हाथ। जौ घर जा रौ अपना चले हमारे साथ।"

अर्थात् कबीर निर्भीक रूप से समाज को चुनौती देते हुए अपने साथ उसी व्यक्ति को चलने के लिए कहते हैं जो उनके साथ बिना फिक्र के चल सके। यहाँ कबीर का मानवतावाद पाठ बहुत ही स्पष्ट है। यदि इंसान इंसान से प्रेम न करे तो किससे करेगा? इसलिए संतों ने 'प्रेम' को अहसास और अनुभूति बताया है जो कि मानवतावाद का एक विशेष लक्षण है। बिना प्रेम का क्या कोई कार्य सम्भव है? इस प्रकार निर्गुण और सगुण संतों ने अपने-अपने ईश्वर से निराकार और साकार रूप में प्रेम पर स्वयं को ईश्वर की प्रेम तथा भक्ति में न्यौछावर कर दिया। मीराबाई ने कृष्ण के प्रेम में लीन होकर कहा—"मेरो तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोए।" हेरी मैं तो दरद दिवाणी, म्हारा दरद ण जाणया कोई।" उक्त पंक्तियाँ मीरा के प्रेम को दिखाती हैं। मीरा प्रेम दिवानी ऐसी हुई कि उन्होंने कृष्ण को ही अपना पति मान लिया और अपने पति के घर जाने से इनकार कर दिया। प्रेम में समर्पण की आवश्यकता होती है, जो कि सभी संतों ने किया। मानवता भी हमें यही सीखाती है कि हमें दूसरों के प्रति दया का भाव रखना चाहिए और दूसरों का भला करना चाहिए। मानव जीवन का यही उद्देश्य है।

तुलसीदास जी ने तो मानव जीवन को बहुत दुर्लभ बताया है। यह शरीर एक ही बार मिलता है। इसका उपयोग करना चाहिए जिसने इसका उपयोग नहीं किया वह मानव नहीं, ऐसी संतों की सोच थी। मानवतावाद को लेकर भारतीय दर्शन में

31. मानवी हक्क आणि अनुसूचित जातीतील विधवा महिला

-¹प्रा. हनुमंत अरविंद, ²प्रा. डॉ. मिसे रामचंद्र

¹संशोधक विद्यार्थी, राजर्षी शाहू महाविद्यालय, परभणी
²संशोधक मार्गदर्शक, दिगंबरराव बिंदू महाविद्यालय, भोकर

व्यक्तीला व समाजाला स्वतःचे अस्तीत्व टिकविण्याकरिता जशी मुलभूत गरजांची पूर्तता करणे आवश्यक आहे तसेच स्वतःचा विकास, प्रगती व परिवर्तण घडवून आणण्याकरिता हक्काची (अधिकाराची) आवश्यकता असते. त्याला जोपर्यंत स्वातंत्र्य व संधी उपलब्ध होत नाही तो पर्यंत त्याचा विकास होत नाही. मानव तो कोणत्याही देशाचा असो त्याला मानवी हक्काची नितांत आवश्यकता असते. म्हणून व्यक्ती आपले हक्क मिळण्यासाठी कधी लोकशाही मार्गाने तर कधी बंडकरोन लढत असतो. म्हणूनच म्हटले आहे हक मांगनेसे नही मिलते वे छिनं लेने पडते है। भारतीय समाजव्यवस्थेचा विचार केल्यास असे लक्षात येते की येथे बहुसंख्य लोकांना त्यांच्या मुलभूत हक्कापासून वंचित ठेवले होते. मग प्रश्न असा निर्माण होतो की, समाजातील, राष्ट्रातील बहुसंख्य जनता ही त्यांच्या मुलभूत हक्कापासून वंचित राहत असेल तर राष्ट्राची उभारणी कशी होणार म्हणून इथल्या तमाम वंचीतांना त्यांचे हक्क मिळवून देण्याकरिता धर्मसंस्थापक, संत, समाजसुधारक यांनी प्रबोधनाचे रान उठविले. तसेच भारतीय राज्यघटनेने इथल्या प्रत्येक व्यक्ती त्यांचे हक्क मिळवून दिले मात्र, याच देशातील अनुसूचित जातींना विधवा महिलांना व अनुसूचित जातीतील विधवा महिलांना त्यांचे हक्क मिळाले का? याचा शोध घेण्याकरिता हा शोधनिबंध आहे.

उद्देश :

(1) अनुसूचित जातीतील विधवा महिलांच्या समस्यांचा अभ्यास करणे. (2) अनुसूचित जातीतील विधवा महिलांच्या हक्कांचा आढावा घेणे. (3) अनुसूचित जातीतील विधवा महिलांचा सामाजिक दर्जा जाणून घेणे. (4) अनुसूचित जातीतील विधवा महिलांना भारतीय राज्यघटनेने दिलेले हक्क याचा आढावा घेणे.

गृहितके:

या शोधनिबंधाच्या निष्कर्षापर्यंत पोहंचविण्यासाठी खालील बाबी गृहीत धरल्या गेल्या आहेत. (1) अनुसूचित जातीतील विधवा महिलांना त्यांचे हक्क मिळत नाहीत. (2) अनुसूचित जातीतील विधवा महिला व खुल्या प्रवर्गातील महिला यांच्या समस्यांचे स्वरूप वेगळे आहे. (3) शहरी भागापेक्षा ग्रामीण भागातील अनुसूचित जातीतील विधवा महिलांच्या हक्कांचे मोठ्या प्रमाणावर उल्लंघन होते.

शोधनिबंधातील महत्वाच्या व्याख्या:

अ) मानवीहक्क :

हॉब हाऊस : "आपणाकडून ज्या गोष्टीची अपेक्षा इतर लोक करतात व इतरांकडून ज्या गोष्टीची अपेक्षा आपण करतो त्यासर्व-गोष्टींना मानवी हक्क असे म्हणतात." "जे हक्क कोणताही भेदभाव न करता केवळ 'माणूस' आहे म्हणून समस्त मानवजातीला प्रदान केले जातात त्यास मानवीहक्क असे म्हणतात."

ब) जात : प्रा. रॉबर्ट मॅक आयव्हर व सी.एच. पेज ज्यावेळी व्यक्तीचा दर्जा पूर्व निश्चित असतो तसेच व्यक्ती एकदा असा दर्जा घेऊन जन्माला आला की, तो बदलता येत नाही. अशावेळी असा वर्ग हा जाती व्यवस्थेचा सर्वोच्च प्रकार असतो.

चार्लस कुले : - "जन्मावर आधारित बंदिस्त वर्ग म्हणजे जात होय."

क) अनुसूचित जाती : "1935 च्या भारतीय कायदानुसार अस्पृश्य जातींची एक यदी तयार करण्यात आली होती यामध्ये ज्या अस्पृश्य जातींचा समावेश करण्यात आला त्यांना अनुसूचित जाती. (Scheduled Casts) असे म्हणतात." "भारतीय संविधानाच्या 366 कलमाच्या तरतुदी नुसार ज्या जाती, वंश अथवा जातीचा उपभाग यांचा भारतीय शासनाने अनुसूचित जाती म्हणून उल्लेख केला असेल त्याच सामाजिक गटांना अनुसूचित जाती मानले जाईल."

ड) विधवा : "ज्या स्त्रीचा पती वारला (मृत्यू पावला) आहे. आणि जीने पुनर्विवाह केलेला नाही त्या स्त्रीला विधवा असे म्हणतात."

संशोधन पध्दती :-

सदर शोधनिबंधाचा उद्देश हा अनुसूचित जातीतील विधवांच्या सामाजिक जिवणाचे ज्ञान प्राप्त करणे व आवश्यक त्या सुधारणा करणे हा असल्या कारणाने हे शुद्ध स्वरूपाचे

संशोधन आहे. हा शोधनिबंध शास्त्रीय पध्दतीने लिहिला गेला असल्यामुळे व हा सामाजिक संशोधनाचा भाग असल्यामुळे सामाजिक संशोधनाच्या ज्या पायऱ्या आहेत त्याचा येथे वापर करण्यात आला आहे. या करीता परिचयात्मक, वर्णनात्मक व निदानात्मक अशा तिन्ही संशोधन आराखड्यांचा उपयोग केला गेला असून परभणी जिल्हा हे या शोधनिबंधाकरीता अध्ययन क्षेत्र म्हणून निवडण्यात आलेले आहे. तथ्य संकलनाकरीता प्राथमिक व दुय्यम असे दोन्ही स्रोत उपयोगात आणले आहेत. या करीता संभाव्यता नमुना निवड पध्दती वापरली गेली आहे.

विषय प्रवेश (स्वरूप):

प्राचीन काळापासून ते आधुनिक भारताच्या इतिहासात इतिहासकारांनी जो इतिहास लिहून ठेवला तो वरीष्ठ व उच्च वर्गातील स्त्रीयांचाच इतिहास लिहिला गेला. परंतु वर्णव्यवस्थेनुसार कनिष्ठ समजलेली स्त्री त्यातही निम्न वर्गातील स्त्री अथवा विधवा स्त्री याविषयी फारसे लिहिले गेले नाही. त्यामुळे त्या विधवा स्त्रीयांना कोणत्या समस्यांना तोंड द्यावे लागते, त्यांना त्यांचे हक्क मिळतात का? अशा अनेक प्रश्नांचा शोध या शोधनिबंधातून घेतला जाणार आहे.

मानवी हक्काचे स्वरूप:

तसे पाहता मानवी हक्क व मूलभूत हक्क यांमध्ये सुक्ष्म अंतर आहे. मानवी हक्क म्हणजे जगातील कोणताही व्यक्ति ज्याला स्वतःची प्रगती करण्यासाठी व किमान जीवन जगण्यासाठी जे हक्क आवश्यक असतात त्यांना मानवी हक्क असे म्हणतात तर एखाद्या व्यवस्थेने अथवा यंत्रणेने (उदा. राष्ट्र, राज्य) नागरीकांना दिलेल्या हक्कांना मूलभूत हक्क असे म्हणतात. जागतिक पातळीवर 16 फेब्रुवारी 1946 ला मानवी हक्क आयोगाची स्थापना झाली. मानवी हक्क हे मुळात निसर्गदत्त असून ते सर्वव्यापी आहेत. भारतात राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोगाची स्थापना 1993 ला झाली असली तरी भारतीय राज्य घटनेच्या माध्यमातून अनुसूचित जातीतील महिला असोत वा विधवा महिला असोत त्यांच्या हक्काचे जतन करून त्यांना माणूस म्हणून जगण्याचा अधिकार 1950 पासूनच भारतीय संविधानाने दिला आहे. संविधानातील कलम 14 ते 22 मध्ये भारतीय नागरीकांना जे मूलभूत अधिकार दिले गेले आहेत. त्यानुसार आपोआपच अनुसूचित जातीतील विधवा महिलांना त्यांचे हक्क मिळालेले आहेत, परंतु खरा प्रश्न निर्माण

होतो. तो म्हणजे समाजामध्ये खरोखरच अनुसूचित जातीतील विधवांना त्यांचे हक्क मिळतात का? याचे उत्तर नाही असेच आहे. कारण आजही एखाद्या अस्पृश्य जातीतील महिला लोकप्रतिनिधीला राष्ट्रीय ध्वजाचे ध्वजारोहन करण्यापासून रोखले जात असेल, ती महिला केवळ अस्पृश्य आहे म्हणून तीची शारीरिक अवहेलना होत असेल तर त्यांना त्यांचे हक्क मिळतात असे म्हणणे उचित ठरणार नाही. अनुसूचित जातीला उद्देशून दलित ही संकल्पना वापरली जाते. म्हणून अनुसूचित जातीतील स्त्रीयांच्या समस्येचे वर्णन दलित साहित्यातून झाल्याचे ही निदर्शनास येते. प्रा. संजयकुमार कांबळे यांचे मते अनुसूचित जातीतील महिलांना पुढेसे प्ररुषसत्तेला सामोरे जावे लागते. तर जमीनदार अथवा उच्चवर्णय स्त्रीयांना अशा प्ररुषसत्तेला सामोरे जावे लागत नाही म्हणून दोन्ही संवर्गातील (समुहातील) स्त्रीयांचे शोषण सारखे नाही.

अनुसूचित जातीतील महिलांची जशी अवस्था आहे, त्यांना ज्या समस्यांना सामोरे जावे लागते त्या पेक्षाही अधिक अनुसूचित जातीतील विधवा महिलांना समस्येचा समाना करवा लागतो. महिलांना त्यांचे हक्क बहाल करण्यासाठी राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय पातळीवर सिमॉन दि-बोव्हा, बॉल्टस्ट्रानाक्राफ्ट, मार्गरेट फूलर, हर्जिनिया वुल्फ यांनी स्त्रीवादी चळवळी उभारून त्यांना त्यांचे हक्क मिळवून देण्याचा कसोशीने प्रयत्न केला, तर भारतात भगवान बुध्द महात्मा बसवेश्वर, म. ज्योतीबा फुले, सावित्रीबाई फुले, राजर्षी शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी व इतर अनेक समाज सुधारकांनी मागासवर्गीय स्त्रीयांना त्यांचे हक्क मिळवून देण्याचा प्रयत्न केला.

अनुसूचित जातीतील विधवा महिला व त्यांचे हक्क :

अनुसूचित जातीत प्रामुख्याने महाराष्ट्रामध्ये प्रमुख जाती म्हणून महार (आताचे बौध्द) मांग, चांभार, ढोर या व इतर प्रमुख जाती पहावयास मिळतात. भारतीय समाजात सर्वच जातीधर्माच्या स्त्रीयांचे स्थान हे लिंगभेदानुसार पुरुषांच्या तुलनेत निम्न आहे. म्हणजे पारंपारिक समाजव्यवस्थेनुसार सर्वच स्त्रीया ह्या 'दलित' आहेत. दलित स्त्रीवादी दृष्टीकोणानुसार काही अभ्यासकांच्या मते बहुजन, अस्पृश्य दलित समाजातील स्त्रीयांचा दर्जा व समस्या भिन्न स्वरूपाच्या आहेत. तर भारतीय समाज व्यवस्थेमध्ये विधवा स्त्रीकडे पाहण्याचा दृष्टीकोण सुध्दा वेगळा आहे. पती निधनानंतर

स्त्रीचे जन्म अस्तीत्वच संपले की काय असे वाटते कारण, एकतर जातीने मागास व तीच्यावर स्वामीत्व गाजविणारा तीचा पती ह्यात नाही म्हणजे ती काहीच करू शकत नाही. असेच समाजाने गृहीत धरलेले असते. म्हणजेच त्यांना त्यांचे हक्क दिले जात नाहीत. तीचे सर्व व्यवहार कुटूंबातील इतर सदस्यच करतात म्हणून अनुसूचित जातीतील विधवा महिला ही समाजिक, आर्थिक, राजनैतिक हक्कापासून वंचित असल्याचे दिसते.

विधवा स्त्री व मानवी हक्क :

ज्या विवाहित, महिलेचा पतीवारला आहे. (मृतपावला) व तीने पुनर्विवाह केलेला नाही त्या स्त्रीला विधवा असे म्हटले जाते. भारतात विधवा स्त्रीला अनेक समानार्थी शब्द आहेत. भारतात विधवा महिला एक शाप समजली जात होती. तिला जीवन अत्यंत त्यागमय, कष्टमय व कठीण परिस्थितीत जगावे लागत असे. खरतर या मागचा मुख्य हेतू हा तिला व परपुरुषाला शारीरिक आकर्षण वाटू नये. मात्र याला धार्मिक परंपरेचा रंग दिला गेला. विधवांना पुनर्विवाह करण्याचा कायदा केला होता. मात्र समाजाद्वारे हवी तेवढी स्विकृती मिळाली नाही. अनुसूचित जातीतील विधवा महिलांचे इक त्यांना मिळत नाहीत. कारण आजही त्यांना सामाजिक जीवनात अनेक बंधने आहेत. स्त्रीला आजही एक उपमोगाची वस्तू म्हणूनच पहाण्याचा प्रघात कमी झालेला नाही. अनुसूचित जातीतील स्त्रीयानंतर मुळात स्थावर मालमत्ताच नाही उत्पन्नाचे स्रोत अल्प प्रमाणात असल्याने आर्थिक व्यवहार करण्याचा योग्य येत नाही आणि आलाच तर कधी वयाची विधवा असेल तर चारीत्र्याच्या संशयावरून ब्यबहाराच करू दिले जात नाहीत. विवाहाच्या बाबतीत देखील नियमात बंदीस्त करून ठेवले आहे. एवढेच नाही तर जोडीदार निवडीचा अधिकार देखील नाही.

निष्कर्ष : -

थोडक्यात काय, तर वरील शोधनिबंधातून हेच निष्कर्ष पुढे येतात की, आजही अनुसूचित जातीतील स्त्रीया व विधवा यांना त्यांचे हक्क पूर्णपणे बजावता येत नाहीत. हक्कतर मिळतच नाहीत उलटपक्षी त्या शारिरिक, मानसिक, लैंगिक अत्याचारास बळी पडतात. गावगुंड, जमीनदार, सर्व प्रकारची सत्ता असलेले लोकांकडून अत्याचारास बळी पडावे लागते. भारतीय राज्य घटनेने व मानवी हक्क आयोगाने जरी

अनुसूचित जातीतील महिला व विधवा महिलांना त्यांना त्यांचे हक्क दिले असले तरी प्रत्यक्षांमध्ये मात्र त्या महिला आपल्या या हक्काचा उपयोग घेवू शकत नाहीत. जो पर्यंत समाजाची व पुरुषाची मानसिकता बदलत नाही तो पर्यंत अनुसूचित जातीतील स्त्रीयांवरील अत्याचाराचे प्रमाण कमी होणार नाही. लिंगभेद, जातीभेद व उपमोगाची एक वस्तू या दृष्टीकोनातून पाहिल्यामुळे आणि विधवांना धार्मिक बंधनाच्या जोखडामध्ये आडकवून ठेवल्यामुळे त्यांचा विकास होत नाही. धार्मिक, समाजिक, आर्थिक, राजकिय अशा अनेक हक्कापासून आजही अनुसूचित जातीतील महिला व विधवा महिला ह्या वंचितच आहेत.

संदर्भ सुची :

- (1) डॉ. आगलावे प्रदिप, (2009) भारतीय समाज: प्रश्न आणि समस्या, नागपूर: श्री साईनाथ प्रकाशन
- (2) श्री. आगलावे प्रदिप, (2010) सामाजिक संशोधन पद्धतीशास्त्र व तंत्रे. नागपूर: श्री साईनाथ प्रकाशन
- (3) डॉ. भिसे रामचंद्र (2016) ग्रामीण मातंग स्त्री. पुणे: डायमंड पब्लिकेशन
- (4) प्रा. कांबळे संजयकुमार (2016) दलित स्त्रियांच्या मुक्तीचा प्रश्न. पुणे: डायमंड प्रकाशन
- (5) डॉ. सोलापुरे राजशेखर (2014) मानवी हक्क आणि समाज. लातूर: अरुण प्रकाशन
- (6) विजयालक्ष्मी चौहान (2007) राजस्थान मे शहीद विधवाओंकी दशा एवं दिशा. उदयपूर/ दिल्ली : हिमांशु पब्लिकेशन